योग-वासिष्ठ का ज्ञान – (4)

" इच्छा ही बंधन है और इच्छा का त्याग ही मुक्ति है "

योग-वासिष्ठ के 36वें सर्ग में 'इच्छा' के बारे में महर्षि वसिष्ठ ने यह कहा है --

- "इच्छा की उत्पत्ति से जैसा दुःख प्राप्त होता है, वैसा दुःख तो नरक में भी नहीं मिलता; और इच्छा की शान्ति (त्यागने) से जैसा सुख मिलता है वैसे सुख का अनुभव तो ब्रह्म लोक में भी नहीं होता।"

- "प्राणी के हृदय में जैसी-जैसी और जितनी-जितनी इच्छा उत्पन्न होती है, उतनी-उतनी ही उसके दुखों के बीजों की मूँठ (kernel of seeds) बढ़ती जाती है तथा विवेक-विचार द्वारा जैसे-जैसे उसकी इच्छा क्षीण होती जाती है, वैसे-वैसे ही उसके दुःखों का चिंता-रूपी भयंकर रोग शान्त होता जाता है।"

- "सांसारिक विषयों की इच्छा आसक्ति-वश ज्यों-ज्यों घनीभूत होती जाती है, त्यों-त्यों दुःखों की चिन्ता रूपी विषैली तरंगें बढ़ती जाती हैं।"

- "यदि अपने पौरुष और प्रयत्न के बल से इस इच्छा-रूपी व्याधि की चिकित्सा नहीं कर सके तो इस व्याधि से छूटने के लिए कोई दूसरी औषधि है ही नहीं, यह मेरा दृढ़ मत है।"

- "यदि एक ही साथ सम्पूर्ण इच्छाओं का पूर्णतया त्याग न किया जा सके, तो धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा करके ही उसका त्याग करना चाहिए।"

- "इच्छा रहित हो जाना ही निर्वाण है और इच्छायुक्त होना ही बंधन है; इसलिए यथा-शक्ति इच्छा को जीतना चाहिए। भला, इतना करने में कौन सी कठिनाई है?"